IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

निरंजन लाल

शोधार्थी, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर (राजस्थान)

डॉ. राजीव रंजन

शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर (राजस्थान)

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक और बदलते शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थियों के सामने विषय, संकाय और व्यवसाय चयन के कई विकल्प होते हैं, जिससे उनके भविष्य की दिशा और निर्णय क्षमता प्रभावित होती है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक निर्देशन सेवाएँ विद्यार्थियों को उनके रुचि, योग्यता, क्षमता और व्यक्तित्व के अनुरूप व्यावसायिक विकल्प चुनने में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। अध्ययन क्षेत्र कोटपुतली-बहरोड़ और नीम का थाना जिलों तक सीमित रखा गया और कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक पद्धति द्वारा किया गया, जिससे ग्रामीण एवं

शहरी क्षेत्रों तथा राजकीय और गैर-राजकीय विद्यालयों का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो। विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मापन हेतु स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं स्वतंत्र 'टी' परीक्षण द्वारा किया गया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि शहरी विद्यार्थियों और गैर-राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति ग्रामीण एवं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक पाई गई। ये अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक हैं।

मुख्य शब्द: व्यावसायिक निर्देशन, अभिवृत्ति, माध्यमिक स्तर, ग्रामीण-शहरी अंतर, राजकीय-गैर राजकीय विद्यालय, व्यावसायिक मार्गदर्शन, शैक्षिक निर्णय

प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य केवल विषय-वस्तु का बौद्धिक अधिग्रहण कराना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, मूल्यों एवं अभिवृत्तियों का समग्र विकास करना भी है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थी न केवल ज्ञानार्जन करें, बल्कि जीवनोपयोगी निर्णय लेने में सक्षम भी बनें। विशेषतः व्यावसायिक जीवन से संबंधित निर्णय विद्यार्थी के भविष्य, आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। ऐसी परिस्थिति में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है, क्योंकि ये सेवाएँ विद्यार्थियों को उनकी रुचि, योग्यता, क्षमता एवं व्यक्तित्व के अनुरूप उपयुक्त व्यवसाय चयन में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

यद्यपि विद्यालयों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं, तथापि उनकी वास्तविक प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यार्थी इन सेवाओं के प्रति कैसी अभिवृत्ति रखते हैं। अभिवृत्ति व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्ति या मनोवैज्ञानिक झुकाव है, जो उसके विचारों, भावनाओं एवं व्यवहार को दिशा प्रदान करती है। यदि विद्यार्थी व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं को उपयोगी, विश्वसनीय एवं आवश्यक मानते हैं, तो वे व्यावसायिक परामर्श सत्रों, अभिरुचि एवं योग्यता परीक्षणों, कार्यशालाओं तथा मार्गदर्शन कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता करते हैं। इसके विपरीत, यदि उनकी अभिवृत्ति उदासीन या नकारात्मक होती है, तो वे इन सेवाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते, जिससे उनके व्यावसायिक चयन की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।

माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह संवेदनशील एवं निर्णायक चरण है, जहाँ विद्यार्थी विषय चयन, संकाय निर्धारण तथा उच्च शिक्षा की दिशा तय करते हैं। इसी अवधि में वे अपने भविष्य के संबंध में प्रारंभिक योजनाएँ बनाते हैं। यदि इस स्तर पर उनकी अभिवृत्ति सकारात्मक एवं जागरूक होगी, तो वे अधिक आत्मविश्वास के साथ सुविचारित निर्णय ले सकेंगे।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में संसाधनों, सूचना प्रौद्योगिकी, अभिभावकीय सहयोग तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन सुविधाओं की उपलब्धता में अंतर पाया जाता है। इसी प्रकार राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के संरचनात्मक संसाधन, शिक्षण वातावरण एवं परामर्श सेवाओं की गुणवत्ता भी भिन्न हो सकती है। ये सभी कारक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। अतः इन विभिन्न समूहों के मध्य व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है, जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि किन परिस्थितियों में सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास अधिक प्रभावी रूप से हो रहा है तथा किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण एवं व्यावसायिक नियोजन की प्रक्रिया को सुदृढ़ करने की दिशा में भी सार्थक योगदान प्रदान करता है।

अध्ययन का औचित्य

व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन इसलिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह सीधे उनके व्यावसायिक चयन, शैक्षिक निर्णय और भविष्य की योजना को प्रभावित करती है। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक और बदलते शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थियों के सामने विषय, संकाय और व्यवसाय चयन के अनेक विकल्प हैं, और सकारात्मक अभिवृत्ति होने पर वे उपलब्ध मार्गदर्शन सेवाओं का अधिक प्रभावी उपयोग कर अपने व्यावसायिक विकल्प सुविचारित और अनुकूल बना सकते हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों तथा राजकीय और गैर-राजकीय विद्यालयों में संसाधनों, सूचना स्रोतों और मार्गदर्शन सेवाओं में अंतर पाई जाती है, जो विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। इस प्रकार, विभिन्न क्षेत्रों और विद्यालय प्रकारों के विद्यार्थियों के बीच तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि शिक्षा प्रशासन और नीति-निर्माताओं को साक्ष्य-आधारित सुझाव

मिलें और विद्यालयों में सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने हेतु प्रभावी व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रम लागू किए जा सकें।

शोध के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। अध्ययन क्षेत्र कोटपुतली-बहरोड़ एवं नीम का थाना जिलों तक सीमित रखा गया तथा कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया, जिससे ग्रामीण-शहरी तथा राजकीय-गैर राजकीय विद्यालयों का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके। व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मापन हेतु 50 कथनों पर आधारित एक स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया, जिसमें सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के कथन सम्मिलित थे। प्रत्येक कथन के लिए पाँच विकल्प–पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत एवं पूर्णतः असहमत–निर्धारित किए गए तथा 1 से 5 अंक की रेटिंग स्केल अपनाई गई। सकारात्मक कथनों के लिए 5 से 1 तक तथा नकारात्मक कथनों के लिए उल्टा

स्कोरिंग की गई। इस प्रकार अधिकतम प्राप्तांक 250 एवं न्यूनतम 50 निर्धारित किए गए, जहाँ उच्च अंक अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति के द्योतक माने गए। संकलित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं 'टी' परीक्षण द्वारा किया गया तथा दोनों परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.05 स्तर की सार्थकता पर किया गया।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण

परिकल्पना 1 - ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी 1: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति

समूह	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	टी -मूल्य
ग्रामीण	100	152.3	15.2	7.21*
शहरी	100	167.8	13.5	

*0.05 स्तर पर सार्थक; df = 198; टी -सारणी मान ≈ 1.97

विश्लेषण

सारणी 1 के अनुसार ग्रामीण विद्यार्थियों (N = 100) का माध्य 152.3 और मानक विचलन 15.2 पाया गया, जबकि शहरी विद्यार्थियों (N = 100) का माध्य 167.8 और मानक विचलन 13.5 रहा। दोनों समूहों के मध्य स्वतंत्र 'टी' परीक्षण से प्राप्त टी-मूल्य 7.21 है, जो 0.05 स्तर पर सारणी मान (≈1.97) से अधिक है।

यह स्पष्ट करता है कि शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक है। परिणाम सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक हैं। इसका तात्पर्य यह है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी उपलब्ध संसाधनों, डिजिटल जानकारी, व्यावसायिक मेले और मार्गदर्शन कार्यक्रमों का अधिक प्रभावी उपयोग कर रहे हैं, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों में अभिवृत्ति अपेक्षाकृत कम सकारात्मक पाई गई। अतः प्रथम शून्य परिकल्पना ***"ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है"*** **अस्वीकृत होती है।**

आरेख : 1

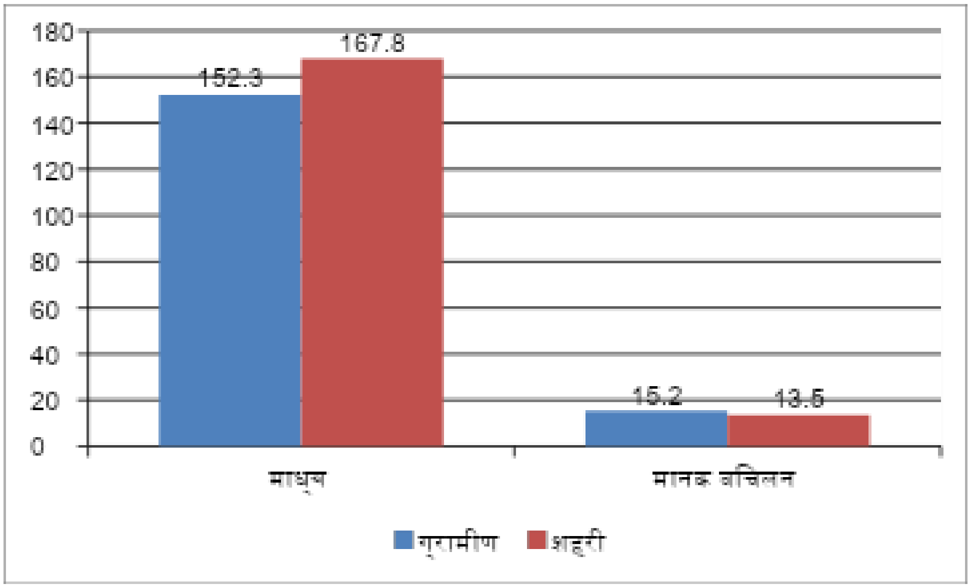

परिकल्पना 2 - राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी 2: राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति

समूह	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	टी -मूल्य
राजकीय	100	151.0	14.8	8.04*
गैर राजकीय	100	169.5	12.9	

*0.05 स्तर पर सार्थक; df = 198; टी -सारणी मान ≈ 1.97

विश्लेषण

सारणी 2 के अनुसार राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों (N = 100) का माध्य 151.0 और मानक विचलन 14.8 पाया गया, जबकि गैर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों (N = 100) का माध्य 169.5 और मानक विचलन 12.9 रहा। स्वतंत्र 'टी' परीक्षण से प्राप्त टी-मूल्य 8.04 है, जो 0.05 स्तर पर सारणी मान (≈1.97) से अधिक है। यह परिणाम दर्शाता है कि गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक है। अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक है। इसका अर्थ यह है कि गैर राजकीय विद्यालयों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं, व्यावसायिक परामर्श, संसाधनों और मार्गदर्शन कार्यक्रमों की उपलब्धता अधिक प्रभावी है। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना ***"राजकीय एवं गैर***

राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है" अस्वीकृत होती है।

आरेख : 2

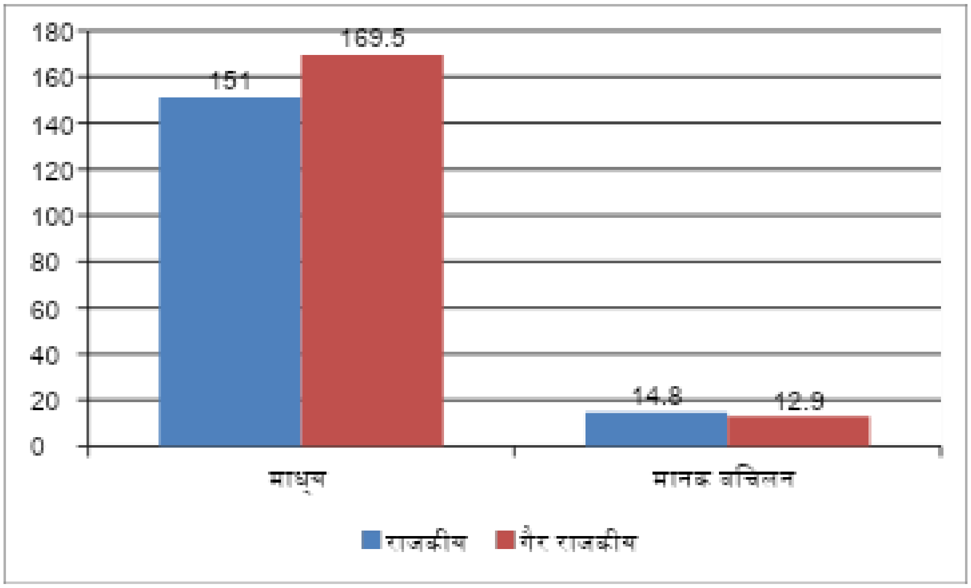

समेकित निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति अभिवृत्ति उनके क्षेत्रीय (ग्रामीण-शहरी) और संस्थागत (राजकीय-गैर राजकीय) परिवेश से प्रभावित होती है। इस शोध का महत्व न केवल शैक्षिक दृष्टि से है, बल्कि यह नीति-निर्माताओं, विद्यालय प्रशासन और शिक्षक समुदाय को भी यह दिशा देता है कि किस प्रकार से व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रमों और संसाधनों के माध्यम से विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्ति को बढ़ाया जा सकता है, ताकि वे अपने भविष्य संबंधी निर्णय अधिक सूचित और आत्मविश्वासपूर्ण तरीके से ले सकें।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं ताकि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति को बढ़ाया जा सके:

1. **विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक मार्गदर्शन कक्ष की स्थापना:** प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में व्यावसायिक काउंसलिंग और मार्गदर्शन कक्ष स्थापित किया जाए, जिसमें व्यावसायिक पुस्तिकाएँ, डिजिटल सामग्री और विशेषज्ञ परामर्श उपलब्ध हो।
2. **प्रशिक्षित व्यावसायिक काउंसलर की नियुक्ति:** विशेष रूप से ग्रामीण और राजकीय विद्यालयों में प्रशिक्षित व्यावसायिक काउंसलर नियुक्त किए जाएँ, जो विद्यार्थियों की रुचि और क्षमता के अनुसार मार्गदर्शन प्रदान करें।
3. **नियमित व्यावसायिक कार्यक्रम:** विद्यालयों में व्यावसायिक मेले, कार्यशालाएँ, सेमिनार और अभिरुचि परीक्षण नियमित रूप से आयोजित किए जाएँ।
4. **डिजिटल और ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग:** ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-परामर्श और ऑनलाइन वेबिनार के माध्यम से व्यावसायिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाए।
5. **अभिभावक सहभागिता:** अभिभावकों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ ताकि वे बच्चों के व्यावसायिक निर्णयों में सक्रिय और समर्थ भागीदार बन सकें।
6. **सरकारी स्तर पर नीति निर्माण:** शिक्षा विभाग द्वारा व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं को विद्यालयी शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया जाए और इसके लिए आवश्यक संसाधन एवं बजट उपलब्ध कराया जाए।
7. **ग्रामीण एवं राजकीय विद्यालयों पर विशेष ध्यान:** अध्ययन में पाए गए अंतर को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण और राजकीय विद्यालयों में विशेष अभियान चलाकर अभिवृत्ति स्तर को बढ़ाया जाए।
8. **निरंतर मूल्यांकन और अनुवर्ती अध्ययन:** व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का नियमित मूल्यांकन किया जाए और समय-समय पर अनुसंधान के आधार पर सुधारात्मक उपाय लागू किए जाएँ।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे. सी. (2015). *शैक्षिक अनुसंधान का परिचय*. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं कान, जे. वी. (2006). *Research in Education* (10th ed.). नई दिल्ली: प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।
- बुच, एम. बी. (Ed.). (1991). *Fourth Survey of Research in Education (1983–88)*. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी।
- गुप्ता, एस. पी. (2014). *सांख्यिकी के मूल तत्व*. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
- कपिल, एच. के. (2011). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी*. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- कोठारी, सी. आर. (2004). *Research Methodology: Methods and Techniques* (2nd ed.). नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2006). *Guidance and Counselling Manual*. नई दिल्ली: National Council of Educational Research and Training।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). *National Education Policy 2020*. नई दिल्ली: Ministry of Education, भारत सरकार।
- सुपर, डी. ई. (1957). *The Psychology of Careers*. न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो।
- शारदा, पी. (2012). *Guidance and Counselling in Indian Education*. नई दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।